IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

गरीबी और बेरोजगारी से मुक्ति में समाचार पत्रों की भूमिका (दैनिक भास्कर, नईदुनिया एवम पत्रिका के विशेष संदर्भ में)

डॉ. हृदय नारायण तिवारी
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी अध्ययनशाला
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह (म.प्र.)
मोबाइल : 9203104739
hntiwariojaswini@gmail.com

एक समय में 'सोने की चिड़िया' कहलाने वाला भारत देश आज कई समस्याओं से जूझ रहा है। उनमें से एक प्रमुख समस्या गरीबी और बेरोजगारी है। यह समस्या देश में ही नहीं अपितु दूसरे देशों में भी व्याप्त है। किसी भी देश में इस समस्या का प्रमुख कारण जनसंख्या है। जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में भारत दूसरे स्थान पर आता है। यही कारण है कि आज बेरोजगारी की समस्या उत्कर्ष पर है। स्वतंत्रता के इतने वर्ष बाद भी सरकारें नए रोजगार बनाने और गरीबी को रोकने में विफल रही हैं। यही कारण है कि ग्रामीण अंचल से लोगों का शहरों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन हो रहा है। 19 दिसम्बर 2016 पत्रिका में प्रकाशित आँकड़ों के आधार पर वर्तमान में 29.8 प्रतिशत भारतीय आबादी गरीबी रेखा से नीचे रहती है। इन आँकड़ों के आधार पर गरीब की श्रेणी में वह लोग आते हैं, जिनकी दैनिक आय शहरों में 28.65 रुपये और गाँव में 22.24 रुपये से कम है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि जिस देश में दाल की कीमत सौ रुपए के ऊपर हो, उस देश में यह राशि कहाँ ठहरती है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों की संख्या बहुत ज्यादा है। सरकारी आँकड़े के अनुसार 30 रुपया प्रतिदिन कमाने वाला व्यक्ति गरीब नहीं है। यह आँकड़ा निश्चित तौर पर अपने–आप में हास्यास्पद है। 8 दिसम्बर 2016 नईदुनिया में प्रकाशित खबर के आधार पर मध्यप्रदेश में लगभग 60 प्रतिशत लोग गरीबी एवं बेरोजगारी में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। 20 जनवरी 2014 दैनिक भास्कर में प्रकाशित खबर के आधार पर वर्तमान में पूरे विश्व में भारत में गरीबों की संख्या सबसे अधिक है। तीस साल पहले भारत में विश्व के गरीबों का पाँचवा हिस्सा रहता था और अब यहाँ दुनिया के एक–तिहाई गरीब रहते हैं। इसका मतलब तीस साल पहले के मुकाबले भारत में आज ज्यादा गरीब रहते हैं। भारत में गरीबी का मुख्य कारण जनसंख्या के साथ–साथ बुनियादी वस्तुओं की लगातार बढ़ती कीमतें भी हैं। गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले व्यक्ति के लिए जीवित रहना ही एक चुनौती है। इस चुनौती को दैनिक भास्कर, पत्रिका और नईदुनिया तीनों समाचार पत्र प्रमुखता से प्रकाशित करते हैं। भारत में गरीबी का एक अन्य कारण जाति व्यवस्था और आय के संसाधनों का असमान वितरण भी है। प्रदेश में संगठित और असंगठित दोनों ही क्षेत्रों में बेरोजगारी तेज गति से बढ़ रही है। इस बेरोजगारी के बढ़ने का बड़ा कारण सार्वजनिक क्षेत्र का दायरा सीमित होता जाना और असंगठित क्षेत्र में निजीकरण–आर्थिक उदारीकरण का प्रभाव है।

वर्तमान में बेरोजगारी का आलम यह है कि बड़ी–बड़ी डिग्री लेने के बावजूद भी चतुर्थ श्रेणी की नौकरी हेतु लोग आवेदन करते हैं। सन् 2015 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा चतुर्थ श्रेणी पद हेतु आवेदन आमंत्रित किए गए, जिसमें योग्यता आठवीं पास रखा गया था। लेकिन इस पद हेतु अनेक पीएच.डी. उपाधि प्राप्त अभ्यर्थी भी आवेदन किए। इस खबर को दैनिक भास्कर, पत्रिका एवं नईदुनिया तीनों समाचार पत्रों ने विस्तार से प्रकाशित किया। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि वर्तमान में पढ़े–लिखे बेरोजगार युवाओं की संख्या ज्यादा है। वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर आँकड़ों में महिला बेरोजगारी का पहलू भी सामने आया है। 23 अगस्त 2016 पत्रिका में प्रकाशित खबर के आधार पर नौकरी की तलाश करने वालों में लगभग आधी महिलाएँ शामिल हैं। इससे यह भी सिद्ध होता है कि महिलाएँ भी घरेलू कामकाज की बजाय नौकरी को ज्यादा महत्व देती हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

दैनिक भास्कर, नईदुनिया एवं पत्रिका तीनों प्रमुख समाचार पत्रों में नियमित रूप से गरीबी एवं बेरोजगारी जैसे प्रमुख मुद्दों को स्थान दिया जाता है। इसके बावजूद भी मध्यप्रदेश में बेरोजगारी का आँकड़ा साल–दर–साल बढ़ता जा रहा है। सरकारी आँकड़े कुछ भी दावे करें लेकिन यथार्थ कुछ और ही है। आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय मध्यप्रदेश में शासन ने वर्ष 2012–13 में किए गए प्रदेश के आर्थिक सर्वेक्षण के आधार पर देशभर में जहाँ कई राज्यों में पिछले चार वर्षो में बेरोजगारी का प्रतिशत कम हुआ है, वहीं मध्यप्रदेश में बेरोजगारों की संख्या घटने के बजाय तेजी से बढ़ रही है। पत्रिका के इस सर्वेक्षण में प्रदेश की 75 फीसदी से ज्यादा जनता गरीबी के दायरे में आ गई है। साढ़े सात करोड़ आबादी वाले मध्यप्रदेश में 5.50 करोड़ लोगों का नाम सस्ते अनाज के लिए गरीबी की सूची में दर्ज हो गया है। जबकि 2014 में प्रदेश की 44.30 आबादी को गरीबी के दायरे में बताया गया था। पत्रिका के संपादक श्री योगेश पाण्डेय ने बताया कि सरकारी योजनाओं से लाभ लेने के चक्कर में लगातार गरीब बढ़े हैं। वहीं सरकारी अफसरों ने अपनी रिपोर्ट सुधारने के लिए भी गरीबों के नामांकन में लापरवाही करते हैं। इससे जुड़े मुद्दे को आए दिन पत्रिका, दैनिक भास्कर एवं नईदुनिया प्रकाशित करते हैं। पत्रिका 'द इकॉनोमिस्ट' में प्रकाशित लेख के आधार पर 2011–12 के लिए अनुमानित प्रति व्यक्ति आय, जो 60,603 रुपये प्रतिवर्ष है, यदि सभी देशवासियों को बराबर मात्रा में मिली होती तो शायद देश में गरीबी का नामोनिशान मिट जाता। वर्तमान परिस्थिति में ऐसा अपेक्षित भी नहीं है, लेकिन फिर भी देश की प्रगति के साथ ऐसी अपेक्षा स्वाभाविक ही है कि बढ़ती आमदनियों का एक बड़ा हिस्सा गरीब लोगों को मिले और उनके जीवन स्तर में सुधार हो। वर्तमान में बेरोजगारी का आलम यह है कि मध्यप्रदेश के ग्वालियर जिला न्यायालय में चपरासी के पदों की भर्ती हेतु बी.ई., एम.बी.ए. एवं पीएच.डी. डिग्री धारी युवकों ने भी आवेदन किया। इस पद हेतु आठवीं पास योग्यता मागी गयी थी। इन योग्यताओं को देखकर जिला न्यायाधीश भी परेशान थे कि इन अभ्यर्थियों को किस आधार पर नियुक्त किया जाए। यह खबर 14 जनवरी 2017 दैनिक भास्कर, पत्रिका एवं नईदुनिया में विस्तार से प्रकाशित हुई।

दैनिक भास्कर : प्रकाशित समाचारों का प्रभाव : भारत आज बेरोजगारी के एक बड़े संकट का सामना कर रहा है। वर्तमान में युवाओं के पास अच्छी नौकरियाँ नहीं हैं। गरीबी, पानी की कमी, साधन–सुविधाओं की कमी, कुपोषण, अशिक्षा और बेरोजगारी जैसी कई वजह हैं, जिनके चलते ग्रामीण क्षेत्र काफी प्रभावित हो रहे हैं। यह बात दैनिक भास्कर के समाचारों के अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है। भारत में इस समस्या से निपटने के लिए कौशल विकास की जरूरत है। कौशल आधारित शिक्षा की मदद से युवा बेरोजगारी से मुकाबला कर सकते हैं। 2014 से केंद्र की मोदी सरकार ने कौशल विकास पर विशेष ध्यान देते हुए युवाओं को प्रशिक्षित कर स्वरोजगार की ओर प्रेरित किया है। भारत की अधिकतम आबादी आज भी ग्रामीण इलाकों में रहती है। दैनिक भास्कर समाचार पत्र उन सभी तथ्यों को प्रकाश में लाता रहा है, जिससे गरीबी और बेरोजगारी को कम किया जा सके। दैनिक भास्कर समाचार पत्र 2014 से 2019 की अवधि में विविध विषय शीर्षकों जैसे– आत्मविश्वास सफलता और जॉब पाने का मौका, 0.1 प्रतिशत अमीरों के पास है दुनिया की 13 प्रतिशत दौलत, ट्रैवल इंडस्ट्री में मिलेगी 10 लाख नौकरियाँ, 11 साल बाद भी कलावती पर 50 हजार का कर्ज, युवा बेरोजगार ना रहे इसलिए खुद अपने पैरों पर खड़े हों, उन्हें बैंक लोन भी देगा, बेरोजगार युवाओं को प्रशिक्षण देकर बनाया जा रहा है आत्मनिर्भर जैसे विषय शीर्षकों के तहत जो समाचार प्रकाशित हुए, इन सभी का समाज और सरकार पर व्यापक असर हुआ है। किसी भी प्रकाशित खबर का संबंध समाज और सरकार दोनों से होता है। यही कारण है कि समाज की समस्याओं को जनप्रतिनिधियों तक पहुँचाने में समाचार पत्रों की अहम भूमिका होती है। शासन की जनोपयोगी योजनाओं को जन–जन तक पहुँचाने एवं उसके क्रियान्वयन में भी समाचार पत्रों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। दैनिक भास्कर में प्रकाशित खबरें– जन्म से ही दृष्टिहीन हैं दो भाई, पढ़ाई कर डिजाइनिंग सीखी अब खड़ा किया अपना

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

कारोबार भी इस बात की तस्दीक करती हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दैनिक भास्कर समाचार पत्र समाज में सामाजिक जीवन से जुड़ी गरीबी और बेरोजगारी की समस्या को उठाकर उसके निश्चित समाधान की दिशा में कारगर सिद्ध हो रहा है।

नईदुनिया : प्रकाशित समाचारों का प्रभाव : आज उदारीकरण से देश का आर्थिक और औद्योगिक विकास तेजी से हुआ है, लेकिन इस विकास का लाभ देश के आम आदमी को नहीं मिल पाया है। यह नईदुनिया में प्रकाशित समाचारों के आधार पर ऐसा कहा जा सकता है। एक ओर कहा जाता है कि हमारा लक्ष्य देश के प्रत्येक नागरिक के लिए भोजन, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास व रोजगार की व्यवस्था करना है, वहीं दूसरी ओर हम ऐसी आर्थिक और औद्योगिक नीति अपनाते हैं जिससे आर्थिक विकास का समूचा लाभ देश के 5 प्रतिशत अभिजात्य वर्ग को मिलता है। सरकारी नीतियों का यह विरोधाभास समाज में असंतोष को जन्म दे रहा है। देश में गरीबों का जीवन स्तर सुधारना और बेरोजगारी को दूर करना प्रत्येक सरकार की प्राथमिकता होती है, लेकिन किसी न किसी स्तर पर इसमें कमी रह जाती है। नईदुनिया समाचार पत्र गरीबी और बेरोजगारी की समस्या को लगातार उठाकर नौकरशाही को सचेत करता रहा है। भारत में जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है। बेरोजगारी ही गरीबी की मूल जड़ है। जनसंख्या आज जितनी तेजी से बढ़ रही है, व्यक्तियों का आर्थिक स्तर और रोजगार के अवसर उतनी ही तेज गति से गिरते जा रहे हैं। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए यह संभव नहीं है कि वह इतनी बड़ी जनसंख्या को रोजगार दे सके। रोजगार की तलाश में दिन रात एक कर रहे व्यक्तियों की संख्या साधनों और उपलब्ध अवसरों की संख्या से कहीं अधिक है। यही कारण है कि आज भी अधिकांश युवा बेरोजगारी में ही जीवन व्यतीत करने के लिए विवश हैं। नईदुनिया समाचार पत्र गरीबी और बेरोजगारी से संबंधित 2014 से 2019 की अवधि में विविध विषय शीर्षकों जैसे– अप्रैल में 2016 के बाद सबसे ज्यादा बेरोजगारी, रोजगार के साथ युवा शक्ति के समुचित दोहन पर भी हो विचार, रोजगार पर केंद्रित होगा आम बजट, युवाओं को दी रोजगार की जानकारी, गरीबी के कारण बच्चों की मौत, नई शिक्षा नीति में बेरोजगार नहीं रहेंगे छात्र, गरीबों के लिए पक्का मकान आदि के तहत जो समाचार प्रकाशित हुए उनके मूल में गरीबी और बेरोजगारी से मुक्ति का संदेश है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नईदुनिया समाचार पत्र गरीबी व बेरोजगारी की समस्या के समानांतर कौशल विकास के प्रयासों को प्रकाशित कर समाज में स्वरोजगार को विकसित करने एवं विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक जागरूकता का संदेश देकर गरीबी और बेरोजगारी से मुक्ति की दिशा में सक्रिय पहल कर रहा है।

पत्रिका : प्रकाशित समाचारों का प्रभाव : भारत की कुल आबादी का लगभग एक तिहाई हिस्सा आज गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करता है, जिसमें अधिकांश गरीब ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं। पत्रिका समाचार पत्र के समाचारों के अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत के 7 राज्यों छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में बड़ी जनसंख्या गरीब है, लेकिन पिछले दो दशकों में गरीबी दूर करने की योजनाओं और ग्रामीणों के शहरी इलाकों में पलायन के कारण गरीबों की संख्या में कमी हुई है। पत्रिका के समाचारों के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण भारत के अधिकांश किसान अभी भी कृषि के प्राचीन तरीकों पर ही निर्भर हैं, जिसके कारण वार्षिक उत्पादन बहुत कम होता है। कई ग्रामीण क्षेत्रों की स्थिति इतनी दयनीय है कि इनमें स्वच्छता, बुनियादी जरूरतों, संचार और शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाओं तक का अभाव है। इसके अलावा शराब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, तंबाकू की लत, नशीली दवाओं का सेवन और अन्य बुरी आदतें ग्रामीण गरीबी को बढ़ाती हैं। पत्रिका समाचार पत्र इन सभी के दुष्प्रभावों के खिलाफ सामाजिक जागरूकता लाने के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों व श्रमिकों को सरकार द्वारा चलाई जाने वाली योजनाओं का ज्ञान कराता रहा है। इसके अलावा ग्रामीण विकास योजनाओं को जन–जन तक पहुँचाने तथा उनके सही क्रियान्वयन पर जोर देकर गरीबी और बेरोजगारी जैसी विकराल

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

समस्याओं को कम करने में सतत प्रयासशील है। पत्रिका समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार सरकारी नौकरियों का आकर्षण शीर्षक में यह सच्चाई उभरकर आई कि आज चतुर्थ श्रेणी की सरकारी नौकरी के लिए काफी ऊँची योग्यता रखने वाले उम्मीदवार भी आवेदन कर रहे हैं। इतना ही नहीं कुछ सौ पदों के लिए लाखों की संख्या में आवेदन होते हैं। इससे रोजगार की दशा और सरकारी नौकरियों के प्रति बढ़ते आकर्षण का खुलासा होता है। ऐसी खबरें आए दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित होती हैं। पत्रिका समाचार पत्र प्रतिदिन एक कॉलम में रोजगार में से जुड़ी खबरों का प्रकाशन कर युवाओं को रोजगार प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। पत्रिका समय–समय पर कौशल विकास कार्यक्रमों का आयोजन एवं कौशल आधारित प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता फैलाकर समाज में गरीबी और बेरोजगारी को कम करने में मददगार सिद्ध हो रहा है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मध्यप्रदेश से गरीबी और बेरोजगारी को दूर करने के लिए प्रदेश के तीनों प्रमुख पत्र दैनिक भास्कर, पत्रिका एवं नईदुनिया सतत प्रयासशील हैं। इन तीनों समाचार–पत्रों में शासन की योजनाओं को जन–जन तक पहुँचाने का सतत प्रयास चलता रहता है। आज जरूरत इस बात की है कि गरीबी और बेरोजगारी को बढ़ाने वाले विकास के गलत मापदंडों को त्याग कर हम विकास का एक ऐसा रास्ता चुनें जिसमें सभी को यथायोग्य उत्पादक रोजगार मिले। देश पर विदेशियों का प्रभुत्व बढ़ाने वाले विदेशी निवेश का मोह त्याग कर देश के संसाधनों और देश की प्रज्ञा के आधार पर उत्पादन का ऐसा तंत्र विकसित किया जाये, जहाँ देश की मानसिकता के अनुसार स्वरोजगार को बढ़ावा मिले।

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

1. दुबे, डॉ. एस.के., 'पत्रकारिता के नये आयाम', लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2006
2. यामिनी, रचना भोला, 'पत्र और पत्रकारिता', डायमंड पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, 2006
3. पन्त, एन.सी., 'हिन्दी पत्रकारिता का विकास', राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
4. गोदरे, विनोद, 'हिन्दी पत्रकारिता स्वरूप एवं संदर्भ', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
5. कौल, जवाहरलाल, 'हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
6. चैतन्य, एस.पी., 'पत्रकारिता एवं जनसंचार प्रश्नोत्तरी', प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2008
7. रानी, डॉ. राजकुमारी, 'पत्रकारिता की विविध विधाएँ', जयभारत प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005

समाचार–पत्र

1. दैनिक भास्कर
2. नईदुनिया
3. पत्रिका

पत्रिकाएँ

1. आलोचना
2. अहा! जिंदगी
3. अक्षर वार्ता

वेबसाइट

http://www.dainikbhaskar.com

http://www.patrika.com

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, July 2023

http://www.naiduniya.com

http://www.amarujala.com